The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 1 | January 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान

राहुल कुमार

(सहायक प्रवक्ता,इतिहास विभाग), गुरु नानक खालसा कॉलेज, अबोहर, पंजाब।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18648652

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-01-2026

Published: 10-02-2026

Keywords:

भारतीय, महिलाएं, स्वतंत्रता आंदोलन, भूमिका, समाज,संग्राम।

ABSTRACT

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास महिलाओं के योगदान का ज़िक्र किए बिना अधूरा होगा। भारत की महिलाओं द्वारा किए गए बलिदान का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है । स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास महिलाओं के बलिदान, निस्वार्थता और बहादुरी की कहानियों से भरा पड़ा है। हममें से बहुत से लोग नहीं जानते कि सैकड़ों महिलाएं ऐसी थीं जिन्होंने अपने पुरुष साथियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ाई लड़ी। उन्होंने सच्ची भावना और बिना डरे साहस के साथ लड़ाई लड़ी। भारतीय महिलाओं ने कई तरह की पाबंदियों को तोड़ा और अपने पारंपरिक घर-गृहस्थी वाले कामों और ज़िम्मेदारियों से बाहर निकलीं। इसलिए, स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय जागरण में महिलाओं की भागीदारी अविश्वसनीय और तारीफ़ के काबिल है। हालांकि, पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के लिए योद्धाओं की तरह लड़ना आसान नहीं था। इसके बावजूद, महिलाओं ने ऐसे रूढ़िवादी लोगों की सोच को बदलने की कोशिश की, जो सोचते थे कि महिलाएं सिर्फ़ घर के काम करने के लिए होती हैं। इसके अलावा, महिलाओं ने न सिर्फ़ अपनी जान कुर्बान की, बल्कि ऐसी समस्याओं का भी सामना किया। रानी लक्ष्मीबाई ऐसी ही महिलाओं में से एक थीं, जिन्होंने सभी मुश्किलों का सामना करते हुए ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ाई लड़ी, इसलिए यह पेपर इतिहास में महिलाओं द्वारा दिखाए गए उग्र स्वभाव और उनकी विरासत को उजागर करता है।

परिचय

आज़ादी से पहले के समय में, देश में महिलाओं की स्थिति बहुत खराब थी। इसका मुख्य कारण यह था कि पुरुष प्रधानता का बोलबाला था। महिलाओं की मुख्य ज़िम्मेदारियाँ घर के काम-काज तक ही सीमित थीं और उन्हें दूसरे कामों और गतिविधियों में हिस्सा लेने की इजाज़त नहीं थी, न ही उन्हें अपने विचार और राय व्यक्त करने की अनुमति थी। इस दौरान, कई ऐसी प्रथाएँ चलन में थीं, जिनका महिलाओं पर बुरा असर पड़ता था। इनमें बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह पर रोक, कन्या भ्रूण हत्या, कन्या शिशु हत्या, पर्दा प्रथा, सती प्रथा और बहुविवाह शामिल थे। ईस्ट इंडिया कंपनी के समय में, राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर और ज्योतिबा फुले जैसे कई समाज सुधारकों ने भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में बदलाव लाने से जुड़ी कई चुनौतियों का सामना किया। इस दौरान कई ऐसी महिलाएँ भी थीं, जिन्होंने मार्शल आर्ट में महारत हासिल की थी। रानी लक्ष्मीबाई ने देश की आज़ादी के लिए लड़ाई लड़ी। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी 1817 में ही शुरू हो गई थी, जब भीमा बाई होल्कर ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। मैडम भीकाजी कामा, पहली भारतीय महिला समाजवादी थीं, जिन्होंने 1857 के विद्रोह के बाद अपनी मातृभूमि की आज़ादी के लिए लड़ाई लड़ी। इसमें कोई शक नहीं कि भारतीय साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष में महिलाओं ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया।

उद्देश्य

1. भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का सामान्य अध्ययन करना।

2. भारत में स्वतंत्रता आंदोलन में महिला स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा निभाई गई भूमिका का पता लगाना।

3. विभिन्न महिला स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जागरूकता पैदा करना।

4. भारतीय महिलाओं की सामाजिक आर्थिक मुक्ति को दिखाना।

खोज विधि

इस पत्र को लिखने के लिए, डेटा को मुख्य रूप से जाने-माने विद्वानों की लिखी किताबों और अलग-अलग नेशनल और इंटरनेशनल जर्नल्स में लिखे गए आर्टिकल्स, पर फोकस करके लिखा गया है। इस पेपर को लिखने के लिए सेकेंडरी डेटे का इस्तेमाल किया गया है।

राष्ट्रीय आंदोलन में महिलायें

इसमें कोई शक नहीं कि भारतीय साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष में महिलाओं ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया। अगर हम अपने राष्ट्रीय आंदोलन में महिला नेताओं के नाम याद करें, तो हमें पता चलेगा कि यह लिस्ट बहुत लंबी है। सरोजिनी नायडू, रानी लक्ष्मीबाई, विजयलक्ष्मी पंडित, कमलादेवी चट्टोपाध्याय और मृदुला साराभाई से शुरू करके राष्ट्रीय स्तर पर, हम प्रांतीय स्तर की नेताओं जैसे केरल में एनी मैस्करेन और ए.वी. कुट्टिमलुआम्मा, मद्रास प्रेसीडेंसी में दुर्गाबाई देशमुख, यू.पी. में रामेश्वरी नेहरू और बी अम्मन, दिल्ली में सत्यवती देवी और सुभद्रा जोशी, बॉम्बे में हंसा मेहता और उषा मेहता और कई अन्य लोगों तक जा सकते हैं। असल में, हमारे राष्ट्रवादी आंदोलन का स्वरूप ऐसा है कि क्षेत्रीय स्तर और अखिल भारतीय स्तर के नेताओं के बीच फर्क करना बहुत मुश्किल है। कई महिलाओं ने स्थानीय स्तर पर शुरुआत की और राष्ट्रीय मंच पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं के योगदान के प्रमुख बिंदु:

सक्रिय भागीदारी और नेतृत्व: महिलाओं ने न केवल रैलियों में भाग लिया, बल्कि सरोजिनी नायडू, कमला नेहरू, अरुणा आसफ अली और विजयलक्ष्मी पंडित जैसी प्रमुख महिला नेताओं ने जन आंदोलनों का नेतृत्व किया।

असहयोग और सविनय अवज्ञा: महिलाओं ने खादी को बढ़ावा दिया, शराब और विदेशी कपड़ों की दुकानों पर पिकेटिंग (धरना) की और नमक सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया।

क्रांतिकारी गतिविधियाँ: प्रीतिलता वाद्देदार और कल्पना दत्ता जैसी क्रांतिकारियों ने सीधे तौर पर ब्रिटिश प्रतिष्ठानों पर हमले किए।

भूमिगत आंदोलन: 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, उषा मेहता ने भूमिगत रेडियो स्टेशन संचालित किया, जबकि अरुणा आसफ अली ने गुप्त रूप से आंदोलन को आगे बढ़ाया।

सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ना: महिलाएं घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर, सामाजिक बंधनों को तोड़ते हुए सार्वजनिक जीवन में आईं और जेल भी गईं

भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी:

सभी महिला स्वतंत्रता सेनानियों की सूची बनाना बहुत मुश्किल काम है और उनमें से कुछ को अलग करना भी उतना ही मुश्किल है।

सरोजिनी नायडू : वह 1917 के आसपास एक प्रमुख राष्ट्रवादी के रूप में उभरीं। वह 1925 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनने वाली दूसरी महिला थीं। उन्होंने 1905 में बंगाल के विभाजन के विरोध के दौरान राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया। नमक सत्याग्रह के दौरान, वह धरसना नमक कारखाने में महिला प्रदर्शनकारियों में से एक थीं। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान अग्रणी भूमिका निभाई और उन्हें जेल हुई। 1942 में, उन्हें "भारत छोड़ो आंदोलन" के दौरान गिरफ्तार किया गया था। उन्होंने पूरे भारत की यात्रा की और महिलाओं के सशक्तिकरण और राष्ट्रवाद पर भाषण दिए। वह महिला इंडिया एसोसिएशन के गठन से भी निकटता से जुड़ी थीं और महिलाओं के मताधिकार प्रतिनिधिमंडल के साथ लंदन गईं।

रानी लक्ष्मीबाई : भारतीय इतिहास ने अभी तक रानी लक्ष्मीबाई जितनी बहादुर और शक्तिशाली महिला योद्धा नहीं देखी है। वह देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव का एक शानदार उदाहरण हैं। वह बहुत से लोगों के लिए प्रेरणा और प्रशंसा का स्रोत हैं। इसलिए उनका नाम भारत के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा गया है।

कमलादेवी चट्टोपाध्याय : 1930 के दशक में उन्होंने नमक सत्याग्रह में भाग लिया। उन्होंने हस्तशिल्प, हथकरघा और रंगमंच को बढ़ावा दिया। भारत सरकार ने उन्हें 1955 में पद्म भूषण और 1987 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया।

एनी बेसेंट : वह 1917 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली अध्यक्ष बनीं। उनकी सहयोगी मार्गरेट कजिन्स ने भारतीय महिलाओं के मताधिकार विधेयक का मसौदा तैयार किया और "महिला भारतीय संघ" की शुरुआत की।

विजयलक्ष्मी पंडित: श्रीमती पंडित को उनकी राष्ट्रवादी गतिविधियों के लिए 1932, 1940 और 1942 में तीन बार जेल हुई। नमक सत्याग्रह के दौरान उन्होंने अपनी बहन और अपनी छोटी बेटियों के साथ जुलूसों का नेतृत्व किया और शराब और विदेशी कपड़े बेचने वाली दुकानों पर धरना दिया। उन्होंने भारत में महिलाओं के लिए कई लड़ाइयाँ लड़ीं और कई बाधाओं को तोड़ा।

दुर्गाबाई देशमुख : नमक सत्याग्रह में हिस्सा लेने के लिए उन्हें तीन साल के लिए जेल हुई थी। इस सत्याग्रह के दौरान जब दक्षिण में राजाजी और टी. प्रकाशम जैसे नेता आंदोलन के दूसरे पहलुओं को व्यवस्थित करने में व्यस्त थे, तब दुर्गाबाई ने मद्रास के मरीना बीच पर नमक कानून तोड़ने वालों के एक समूह का नेतृत्व किया था। उन्होंने बहुत कम उम्र में 'आंध्र महिला सभा' और 'हिंदी बालिका पाठशाला' शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

मृदुला साराभाई : बंटवारे के दौरान उन्होंने भीड़ द्वारा अगवा की गई लड़कियों को बचाने और हिंदू और मुस्लिम दोनों शरणार्थियों को चोट लगने या मारे जाने से बचाने के लिए बहुत बड़ा जोखिम उठाया। 1934 में उन्हें गुजरात से प्रतिनिधि के तौर पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के लिए चुना गया था।

बसंती दास : वह भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान एक भारतीय स्वतंत्रता कार्यकर्ता थीं। उन्होंने विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने खुद स्वतंत्रता गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया और असहयोग आंदोलन के दौरान उन्हें गिरफ्तार किया गया। उन्हें 1973 में पद्म विभूषण मिला।

सुचेता कृपलानी : 1932 में, उन्होंने एक समाज सेविका के रूप में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया और 1939 में राजनीति में आईं और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गईं। 1940 में, उन्होंने फैजाबाद में व्यक्तिगत सत्याग्रह किया और दो साल के लिए जेल गईं। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, वह भूमिगत हो गईं और गुप्त रूप से ब्रिटिश विरोधी प्रतिरोध को संगठित करने की उल्लेखनीय सेवा की।

कमला दास गुप्ता : वह भारतीय महिला स्वतंत्रता सेनानियों में एक शानदार हस्ती रही हैं। वह उग्रवादी वर्ग से थीं और 'युगांतर पार्टी' की एक सक्रिय सदस्य थीं। 1942 में, उन्हें भारत छोड़ो आंदोलन के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया और प्रेसीडेंसी जेल में रखा गया।

डॉ. एस. मुथुलक्ष्मी रेड्डी : वह पहली भारतीय महिला थीं जिन्हें सामाजिक सेवा और चिकित्सा के क्षेत्र में उनकी योग्यता और सेवाओं के लिए 1926 में मद्रास विधान सभा के लिए नॉमिनेट किया गया था। नमक सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन के दौरान महिलाओं पर अत्याचार और महिला आंदोलनकारियों के खिलाफ दमनकारी उपायों के विरोध में, उन्होंने अपने पदों से इस्तीफा दे दिया और स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ीं।

मार्गरेट कजिन्स : एक आयरिश महिला कार्यकर्ता, आयरलैंड में महिलाओं के लिए वोट के अधिकार के लिए लड़ने के बाद, अपने पति के साथ भारत आईं और भारतीय महिलाओं के लिए भी उन्हीं कारणों की वकालत की। वह एनी बेसेंट और सरोजिनी नायडू के साथ जुड़ीं और उनमें जागरूकता लाने के लिए कई महिला संगठनों की स्थापना में मदद की।

राजकुमारी अमृत कौर : वह कपूरथला के शाही परिवार से थीं। वह गांधी से प्रेरित थीं और नमक सत्याग्रह के दौरान कांग्रेस में शामिल हुईं। नमक कानून तोड़ने के आरोप में उन्हें बॉम्बे में गिरफ्तार

किया गया था, जब वह स्वतंत्रता संग्राम के कारणों की वकालत करने के लिए उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत गईं, तो उन्हें राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया गया और दोषी ठहराया गया। वह सात साल तक अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की अध्यक्ष रहीं।

इंदिरा गांधी : आधुनिक भारत की सबसे असाधारण महिलाओं में से एक। वह 1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्य बनीं। 1947 में भारत की आज़ादी के साथ उनकी सार्वजनिक गतिविधि एक नए दौर में प्रवेश कर गई। उन्होंने प्रधानमंत्री के घर को चलाने की ज़िम्मेदारी संभाली। उन्होंने अल्पसंख्यकों की सामाजिक और आर्थिक उन्नति के लिए अथक प्रयास किया। उनका एक आधुनिक, आत्मनिर्भर और गतिशील अर्थव्यवस्था का विज़न था। उन्होंने सांप्रदायिकता, पुनरुत्थानवाद और सभी प्रकार के धार्मिक कट्टरवाद के खिलाफ बहादुरी और ज़ोरदार तरीके से लड़ाई लड़ी। वह भारत के आत्मविश्वास का अदम्य प्रतीक बन गईं।

महिला-समितियाँ (महिला संघ)

20वीं सदी की शुरुआत में कई शहर और कस्बों में महिला संघों का उदय भी देखा गया:

1. स्वदेशी आंदोलन के आलोक में, महिला शिल्प समिति और लक्ष्मी भंडार जैसे महिला संघों की स्थापना रवींद्रनाथ टैगोर की भतीजी और सरला देवी ने की थी। हिताशिनी सभा, एक महिला समूह ने 1907 में स्वदेशी वस्तुओं की एक प्रदर्शनी आयोजित की।

2. कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने अपनी आत्मकथा 'इनर रिसेस, आउटर स्पेसेस' में बताया है कि कैसे उनके गृहनगर मैंगलोर में, उनकी अपनी माँ गिरिजाबाई ने 1911 के आसपास महिलाओं को एक साथ लाने, उनकी समस्याओं पर चर्चा करने और उन्हें हल करने के तरीके खोजने के लिए एक महिला सभा की स्थापना की।

3. रामेश्वरी नेहरू ने भी इस समय एक महिला पत्रिका शुरू की थी: द स्त्री दर्पण, जो बहुत लोकप्रिय थी। इसमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों की राजनीतिक कवरेज का एक दिलचस्प मिश्रण था।

4. भारत महिला जैसी महिला पत्रिकाएँ भी बहुत लोकप्रिय हो रही थीं जो महिलाओं के मुद्दों से संबंधित थीं।

5. गुजरात में एक उत्कृष्ट महिला संगठन, ज्योति संघ, महिला सम्मेलन (AIWC) की स्थापना भी 1927 में हुई थी।

निष्कर्ष

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी की कहानी साहसिक फैसले लेने, सड़कों पर, जेलों में और विधायिका में खुद को खोजने की कहानी है। इतने सारे प्रयासों के बाद भारत को 15 अगस्त, 1947 को आज़ादी मिली। हज़ारों भारतीय महिलाओं ने अपनी मातृभूमि की आज़ादी के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। अहिंसक आंदोलन जिसने भारत को आज़ादी दिलाई, उसने न केवल महिलाओं को साथ लिया, बल्कि उसकी सफलता महिलाओं की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर थी। शायद दुनिया के इतिहास में पहली और एकमात्र बार, एक शक्तिशाली वैश्विक साम्राज्य की शक्ति, जिस पर सूरज कभी अस्त नहीं होता था, उसे केवल शांति, विचारों और साहस से लैस लोगों की नैतिक शक्ति ने चुनौती दी और हराया।अंत में हम कह सकते हैं कि पिछले पचास वर्षों में, महिला आंदोलन परिपक्व हुआ है और इसने ट्रेड यूनियनों, पर्यावरण आंदोलनों और अन्य प्रगतिशील आंदोलनों जैसे अन्य आंदोलनों के साथ अपने संबंधों को धीरे-धीरे गहरा किया है जो सभी प्रकार के उत्पीड़न, अन्याय और गिरावट के खिलाफ लड़ते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

- चंद, तारा; भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, खंड IV, प्रकाशन प्रभाग, भारत सरकार, दिल्ली,
- 1961.
- अग्रवाल, एम.जी; भारत के स्वतंत्रता सेनानी, खंड IV, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, 2008.
- थापर, सुरुचि; भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाएं: अनदेखे चेहरे और अनसुनी आवाजें (1930-32),
- पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, 2006
- राजू, राजेंद्र; भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका, साउथ एशिया बुक्स, 1994।
- मोदी, नवाज़; भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाएं; एलाइड पब्लिशर्स, 2000
- .www.wikipedia.com
- www.newworldencyclodeia.org